मनमानी मत करो

ईश्वर की भक्ति सभी में है और सभी ईश्वर की प्राप्ति कर सकते हैं, लेकिन हमारा मन विघ्न डालता है. इसलिए हमें अपने मन से सावधान रहना चाहिए. यानी जो हमारे मन को भाये वह ही नहीं करना चाहिए. इससे मन शक्तिशाली और मोटा हो जाता है. बाप को बेटे से मोहब्बत होती है और वह सदा उसका फ़ायदा चाहता है. उसको नसीहत भी उसी काम की करता है जिसमें उसका भला हो.

जो बाप ईश्वर का भक्त है तो यह ज़रूरी है कि मामूली आदमियों के मुक़ाबले में उसकी बुद्धि ज़्यादा शुद्ध हो चुकी है और वह बहुत दूर तक की सोच सकता है जिसे आम आदमी नहीं सोच सकते. जब आपने यह मान लिया कि यह हमारे हितेषी हैं, यह जो बात कहेंगे हमारे हित की कहेंगे, तो फिर तुम्हें मनमानी नहीं करनी चाहिए. जब दुनियां के मामलों में आप हमारी बात नहीं मानते तो फिर परमार्थ के मामलों में क्या मानोगे? बात क्या है - क्योकि आपका मन बीच में बिघ्न डालता है.

मान लीजिये कोई बात आपके आचार्य ने आपसे कही या किसी के ज़रिये अपने ख्याल को ज़ाहिर किया तो अच्छाई इसी में है कि उसे मान लेना चाहिए. आपको अपनी अक्ल से उसे परखना नहीं चाहिए. गुरु जो कुछ करेगा, आपके फायदे के लिए ही करेगा. अगर तुम उसकी बात को नहीं मानोगे और बुरा मान कर बैठ जाओगे तो फ़ायदा क्या होगा? देखने में आता है कि गुरु की बात को मानते वहां तक हैं जहाँ तक आपका मन उस बात को क़बूल करता है. गुरु के मुक़ाबले आपने अपने मन को ज़्यादा महत्वपूर्ण मान लिया है और मन को ही अपना दोस्त समझ रखा है. लेकिन तुम यह भूल जाते हो कि हमारा मन ही हमें दुनिया में ले जाकर फंसाता है. जब मन को ही दोस्त मान रखा है, उसी का कहना करते हो तो इस दुनियाँ से निकलोगे कैसे? अगर तुम गुरु को अपना सच्चा हितेषी मानते हो तो उसकी बात भी मानो.

ऐसे भी लोग हैं कि जिनके पास धन की कमी नहीं है. अगर वह घर बैठ कर भी खाएं तो शायद उनकी तीन पीढ़ियां भी उसे ख़तम नहीं कर सकें. फिर भी रूपये में फंसे हैं, परमार्थ क्या कमाएंगे? जिसे अपने कुटुम्ब का पालन-पोषण करना है उसे तो नौकरी या तिज़ारत करनी ही पड़ेगी. उसकी बात अलग है. लेकिन नौकरी-पेशा या दुकान करने वालों को भी दुनियाँ में, अपने पेशे में, ईमानदारी से बरतना चाहिए. क्या आजकल नौकरी में और दुकानदारी में ईमानदारी है? कोई भी अपना काम साफ़ नियत से नहीं करता और अगर करने की कोशिश भी करे तो लोग करने नहीं देते. खैर किसी हद तक यह भी क्षमा के योग्य है. लेकिन जिनके पास बहुत

काफी धन-जायदाद है और फिर भी वोह फंसे हुए हैं, वे मन के ग़ुलाम हैं, परमार्थ कैसे कमाएंगे? किसी संत ने कहा है : "ख़ुदा ख़ुदा भी करे और खुदी का दम भी भरे, बड़ा फरेबी है, झूंठा है वो ख़ुदाई का" .

दुनियाँ तो छोड़ना नहीं चाहते, एक क़दम आगे नहीं बढ़ना चाहते और चाहते हो तरक़्क़ी हो. कैसे हो ? जब तक ख़ुद कोशिश नहीं करोगे तब तक गुरु-कृपा और ईश्वर-कृपा नहीं होगी. हम चाहते हैं कि हमारे सभी सत्संगी भाई यह समझ जाएँ. तुम उस मामले में जो परमार्थ की तरफ ले जाता है कुछ सुंनना नहीं चाहते, करना तो अलग रहा. भक्ति कैसे होगी? फिर शिकायत करते हो कि तरक़्क़ी नहीं होती .

इस दुनियाँ में हर चीज़ का बदला है. तुमने दान दिया, बड़ा अच्छा किया, लेकिन क्या उसे लेने वापस नहीं आओगे? लड़का नौकर रखा तो क्या उससे ख़िदमत नहीं चाहोगे? हो गया बदला या नहीं? अच्छे और शुभ कर्म , मन को सतोगुणी बनाते हैं लेकिन सतोगुणी मन भी आवागमन से नहीं छुड़ाता. जो कामी, क्रोधी और लालची हैं, वे परमार्थ के लायक नहीं हैं- यह संतों का कहना है. फंसे तो सब हीन अवस्था में हो और पहुंचना चाहते हो आसमान में. जिससे कहो कि तुम्हारी फलां बात ठीक नहीं है, वही नाराज़ हो जाता है. कोई बिरला है जिससे कहते हैं तो वह सुन लेता है वर्ना जिससे कहते हैं वह मुँह बना लेता है. कैसे तरक़्क़ी हो सकेगी? जो गुरु के कहने पर चला वह इस भवसागर से निकल गया. जो मन का साथी है वह गुरु का साथी नहीं. अगर तुम गुरु की सहायता करोगे तो वह तुम्हें मन के पंजे से निकाल देगा .

मोक्ष प्राप्त करने के लिए मन का मर्दन तो करना ही होगा. जब तक मन के चक्कर में फंसे रहोगे, मन तुम्हें इस भवसागर से नहीं निकलने देगा. तमोगुणी मन जानवर बनाएगा, रजोगुणी मन दुनियाँ में लौटा कर लाएगा. मरते समय सोचोगे कि यह काम रह गया वह काम रह गया. इसी में अटक कर प्राण निकलेंगे और फिर वापस इस दुनियाँ में आना पड़ेगा. सतोगुणी मन धर्म पर जाता है. आनंद तो दिलवाता है परन्तु वह भी मोक्ष नहीं देता.

जो काम करो, निष्काम भाव से करो, कोई ख्वाहिश मत उठाओ. यह ऊंचे अभ्यासियों के लिए है. सोते वक्त सोचो - "आज कोई इच्छा उठाई " ? अगर उठायी तो संस्कार बन गया. रात को सोने से पहले अपने मन से हिसाब लो. आगे जाकर भूख प्यास की ख्वाहिश भी मिटा देते हैं. मिल गया तो खा लिया, नहीं मिला तो सोच लिया कि आज परमात्मा की मर्ज़ी नहीं थी, और उसी हालत में खुश रहे. असली गुरु तो तुम्हारे अन्दर है, उसी से हिदायत मिलती है. लेकिन जब तक वहाँ पहुँच नहीं है, तब तक बाहरी गुरु से मदद लो.

जो आता है दुनियाँ के लिए रोता आता है. सन्तों के यहां दुनियाँ नहीं मिलती. वे तो दुनियाँ उजाड़ते हैं. यह अलग बात है कि किसी का परमार्थ बिगड़ रहा है और कोई दुनियाँ की कोई ऐसी मुसीबत है जो उसकी तरक़्क़ी में बाधक है, तो उसके लिए दुआ कर देते हैं. वर्ना जब हरेक को हर वक्त यही रोना है, तो कहाँ तक किस-किस के लिए दुआ करें. जितना दुनियाँ में फंसोगे उतनी ही ख्वाहिशें बढ़ेंगी, उतनी ज़्यादा दुःख-तकलीफें आएँगी. इसलिए दुनियाँ में उतना फंसो जितने में कम से कम काम चल सके, जितना कम से कम ज़रूरी हो. किसी काम को करने से पहले खूब सोच लो कि क्या यह काम वास्तव में ज़रूरी है, क्या इसके बिना काम नहीं चलेगा? अगर ज़रूरी हो तो करो, वर्ना छोड़ दो.

भक्ति बढ़ाने का सबसे ऊंचा तरीक़ा यह है कि मन के फंदे से बचें और ईश्वर से नाराज़ न हों. जरा गर्मी हो जाये तो कहने लगते हैं ' हाय बड़ी तपन है ' कभी वारिश ज़्यादा हो गयी तो परमात्मा को कोसने लगे. ये सब बुरी बातें हैं. परमात्मा के सब काम सर्वहित के लिए होते हैं. वह जो करता है किसी अच्छाई के लिए ही करता है. उसके कामों को अपने मन की कसौटी पर मत परखते रहो. जिस हाल में वह रखे, उस हाल में खुश रहो. उफ़ भी न करो. कोई ख्वाहिश मत उठाओ. 'शुक्र' वही है कि अगर तकलीफ़ भी हो रही है तो भी उसकी सराहना करो. हर समय राज़ी -बी-रज़ा में रहो. मान लो किसी का लड़का बीमार हो गया. अगर अच्छा हो गया तो खुश हैं और अगर मर गया तो लगे भगवान को कोसने, संध्या-पूजा बंद कर दी. यह नहीं सोचा कि जिसने दिया था उसने ले लिया. ये परमात्मा से मोहब्बत हुई या लड़के से?

मनमानी करना बंद करो. मन के बंधनों को ढीला करते चलो. हर एक चीज़ को परमात्मा की समझो. मोह छूटता जायेगा. जिस हाल में परमात्मा रखे, उसमें खुश रहो. गुरु के कहने पर चलो और परमात्मा की याद में रहो. ईश्वर तुम्हे प्रेम देगा.

राम सन्देश : जुलाई-सितम्बर , २०१७